



दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों एवं प्रशिक्षु छात्रों की रुचि का अध्ययन (A Study of the Interest of Teachers and Trainee Students in the Two-Year B.Ed. Course)

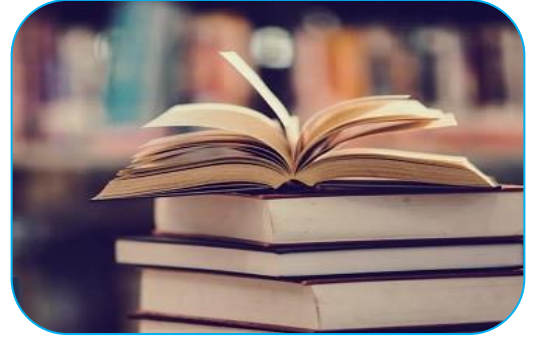
डॉ. प्यारे लाल अहिरवार

सहायक अध्यापक

प्राथमिक विद्यालय, अहिरौलीदान नं.- 01, सेवरही, कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

सारांश

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता सुधार के लिए उच्चकोटि शिक्षकों की आवश्यकता सदैव है। दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम को एनसीटीई द्वारा 2015 में लागू किया गया था जिसका उद्देश्य गुणवत्ता वाले शिक्षकों को तैयार करना था। इस अध्ययन में प्रदेश के विभिन्न जिलों से 240 अध्यापक एवं 300 प्रशिक्षु छात्रों का डेटा एकत्रित किया गया। प्रमाणित विधि के अध्ययन से पता चला कि कुल 72.5% अध्यापक एवं 68.3% छात्र दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम से संतुष्ट हैं। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि पाठ्यक्रम की व्यापक तालिका, व्यावहारिक अनुभव की कमी और स्कूल आधारित संयोजन की कमी के कारण छात्रों की रुचि में कमी आई है।



कुंजी: दो वर्षीय बी.एड., अध्यापक रुचि, प्रशिक्षु छात्र रुचि, शिक्षक प्रशिक्षण, एनसीटीई.

1. प्रस्तावना

शिक्षा को समाज का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना जाता है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की आवश्यकता है (Bajaj & Sangha, 2019)। भारत में शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधार के लिए एनसीटीई ने 2014 में नए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा को विकसित किया और दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की शुरुआत 2015-16 से की गई (Nayak & Dash, 2021)। दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गुणवत्ता वाले शिक्षकों को तैयार करना था जो विद्यालय के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान कर सकें (Mukherjee, 2024)।

इस नए पाठ्यक्रम में छात्रों को अधिक व्यावहारिक अनुभव, स्कूल आधारित संयोजन और आईसीटी का प्रयोग शामिल किया गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षक प्रशिक्षण में बड़े परिवर्तन की जरूरत है (Arora, 2021)। इसने चार वर्षीय संयुक्त बी.एड. पाठ्यक्रम को प्रोत्साहन दिया गया है जिससे छात्र एक साथ स्नातक डिग्री भी प्राप्त कर सकेंगे। इस प्रक्रिया को लागू करने के पीछे कारण अध्यापकों और छात्रों की रुचि का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक प्रशिक्षित शिक्षक ही छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकता है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम को इसी दृष्टिकोण से शुरू किया गया था ताकि शिक्षकों को पर्याप्त समय और संसाधन मिल सकें अपनी क्षमता विकसित करने के लिए।

इस अध्ययन का महत्व इस बात में है कि यह दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों और छात्रों की रुचि का विश्लेषण करता है। इससे पाठ्यक्रम में आवश्यक सुधारों की पहचान करने में मदद मिलती है और भविष्य की योजनाओं के लिए दिशा निर्देश प्राप्त होते हैं। अध्ययन के परिणाम शिक्षा नीति निर्माताओं और प्रशासकों के लिए उपयोगी साबित होंगे।

अध्ययन की प्रासंगिकता इस बात में भी है कि यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली में चल रहे सुधारों का मूल्यांकन करता है। नई शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन के संदर्भ में इस प्रकार के अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। इस अध्ययन से प्राप्त जानकारी भविष्य की शिक्षा नीतियों के निर्माण में सहायक होगी।

2. साहित्य समीक्षा

शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को लेकर विश्व भर में कई अध्ययन हुए हैं। गियोवजोलियास अनुसार शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन किया गया और पाया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की स्व-मूल्यांकन, कार्य में लगन एवं छात्र संबंधों में सुधार लाया (Giovazolias et al., 2020)। रामानी (2023) ने तमिलनाडु के बी.एड. छात्रों के बीच विषय के प्रति उनकी दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि छात्र इस पाठ्यक्रम को संज्ञान के लिए पर्याप्त मानते हैं।

इसी तरह मुखर्जी (2024) ने बी.एड. पाठ्यक्रम में शांति शिक्षा के प्रति छात्रों की दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि पुरुष एवं महिला छात्रों के बीच कोई काफी अंतर नहीं पाया गया। आइज़क्रियरडो अनुसार (2025) किया गया एक अध्ययन जिसमें बताया गया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की मानसिक सुख एवं स्व प्रभाविता को सुधारने में मददगार है। वांग और लियू (2025) ने स्टेम शिक्षा में सेवारत शिक्षकों की स्व प्रभाविता में पेशेवर विकास की प्रभावशीलता का मेटा विश्लेषण किया और पाया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने शिक्षकों की आत्मविश्वास में वृद्धि की।

लोयालका एवं सहयोगियों (2019) ने चीन में एक बड़े पैमाने पर यादृच्छिक मूल्यांकन किया और पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का छात्र उपलब्धि पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा। जांग और चेन (2025) ने डिजिटल अनुदेशात्मक एकीकरण पर शिक्षक पेशेवर विकास के प्रभाव का एक व्यवस्थित अध्ययन किया और पाया कि अनुकूलित प्रशिक्षण कार्यक्रम उच्च जुड़ाव और सुधारित आत्मविश्वास का परिणाम देते हैं।

एंड्राडे (2019) ने छात्र स्व मूल्यांकन पर शोध का एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया और पाया कि स्व मूल्यांकन की प्रक्रिया छात्रों के सीखने में सुधार लाती है। इसी प्रकार निकुला और ओकोनर (2021) ने अंग्रेजी भाषा सीखने वाले छात्रों को गणित पढ़ाने के लिए पेशेवर विकास पर अध्ययन किया और पाया कि विशेष प्रशिक्षण शिक्षकों को बेहतर शिक्षण विधियां अपनाने में मदद करता है।

हेप्ट और सहयोगियों (2022) ने पढ़ने की समझ में भाषा कौशल की भूमिका का अध्ययन किया और पाया कि भाषा कौशल का विकास शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार लाता है। कैली और सहयोगियों (2020) ने एकीकृत स्टेम निर्देश में हाई स्कूल शिक्षकों की आत्म प्रभावशीलता बढ़ाने पर अध्ययन किया और पाया कि विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की आत्मविश्वास में वृद्धि करते हैं।

मार्टिनेज-सौरा और सहयोगियों (2024) ने शिक्षक कल्याण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर अध्ययन किया और पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाती है। ताशनर और सहयोगियों (2024) ने शिक्षक आत्म प्रभावशीलता और पेशेवर विकास पर अध्ययन किया और पाया कि निरंतर पेशेवर विकास शिक्षकों की क्षमता में वृद्धि करता है।

एनसीटीई (2021) ने राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचार्य रूपरेखा प्रकाशित की जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण के लिए नए दिशा निर्देश दिए गए। इस रूपरेखा में पाठ्यक्रम की संरचना, अवधि और सामग्री के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। टाइम्स नाउ (2026) की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि एक वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम को पुनर्स्थापित करने की कोई योजना नहीं है।

एंसेले और सहयोगियों (2021) ने मध्य विद्यालयों में सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों को विकसित करने पर अध्ययन किया और पाया कि अच्छे संबंध छात्रों के सीखने में सुधार लाते हैं। इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुनिश्चित करना शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. शोध विधि

3.1 शोध का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों एवं प्रशिक्षु छात्रों की रुचि का अध्ययन करना था। इसके अतिरिक्त उद्देश्य थे: अध्यापकों की दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति रुचि का स्तर जानना, प्रशिक्षु छात्रों की दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति रुचि का स्तर जानना, अध्यापकों और छात्रों की रुचि के बीच तुलना करना, और पाठ्यक्रम से संबंधित समस्याओं का पता लगाना।

3.2 शोध पद्धति

इस अध्ययन में वर्णनात्मक समीक्षा पद्धति (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया है। यह पद्धति वर्तमान स्थिति को दर्शाने के लिए उपयुक्त होती है। इस पद्धति के माध्यम से बड़े समूह से डेटा एकत्रित करके उसका विश्लेषण किया जाता है।

वर्णनात्मक समीक्षा पद्धति का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यह पद्धति वर्तमान स्थिति का सटीक चित्रण प्रस्तुत करती है। इस पद्धति में सर्वेक्षण के माध्यम से बड़ी संख्या में प्रतिभागियों से डेटा एकत्रित किया जाता है और फिर उसका सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है। इस पद्धति से प्राप्त परिणामों की सामान्यीकरण क्षमता अधिक होती है।

अध्ययन में एक संरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जिसमें दो भाग थे। पहले भाग में प्रतिभागियों की व्यक्तिगत जानकारी जैसे लिंग, आयु, अनुभव आदि संग्रहीत की गई। दूसरे भाग में दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति रुचि से संबंधित 20 प्रश्न थे जिन्हें पांच बिंदु लिकर्ट पैमाने पर मापा गया। प्रश्नावली की विश्वसनीयता क्रॉनबाख अल्फा विधि से जांची गई और यह 0.82 पाई गई जो स्वीकार्य सीमा में है।

3.3 संख्या एवं नमूना विधि

इस अध्ययन का संख्या उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के शिक्षा संस्थानों से चयनित किया गया। कुल 540 प्रतिभागियों से डेटा एकत्रित किया गया, जिसमें 240 अध्यापक और 300 प्रशिक्षु छात्र शामिल थे। संख्या वितरण निम्नलिखित विधि से किया गया:

नमूना चयन सुविधाजनक नमूना पद्धति (Convenience Sampling) के माध्यम से किया गया। इस पद्धति का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यह अध्ययन के लिए आवश्यक डेटा तक पहुंचना आसान बनाता है। शिक्षा संस्थानों के प्रधानाचार्यों से अनुमति प्राप्त करने के बाद प्रतिभागियों से डेटा एकत्रित किया गया।

अध्यापकों का चयन उन शिक्षण संस्थानों से किया गया जहां दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम संचालित हो रहा था। अध्यापकों का न्यूनतम अनुभव दो वर्ष निर्धारित किया गया। छात्रों का चयन द्वितीय वर्ष के बी.एड. छात्रों में से किया गया ताकि उनके पास पाठ्यक्रम का पूर्ण अनुभव हो।

वर्ग	अध्यापक	छात्र
पुरुष	120	140
महिला	120	160
कुल	240	300

तालिका 1: संख्या वितरण

4. डेटा विश्लेषण

इकट्टा के अध्ययन से प्राप्त डेटा का विश्लेषण निम्नलिखित रूप में किया गया:

4.1 अध्यापकों की रुचि

अध्ययन के अनुसार कुल 72.5% अध्यापक दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम से संतुष्ट पाए गए। विभिन्न परिणामों के बारे में अध्यापकों के विचार निम्न प्रकार थे:

अध्यापकों की रुचि के विश्लेषण से पता चला कि पुरुष और महिला अध्यापकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अनुभवी अध्यापकों ने इस पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावी माना जबकि नए अध्यापकों को इसमें कुछ चुनौतियां दिखाई दीं। अध्यापकों ने विशेष रूप से पाठ्यक्रम की अवधि, व्यावहारिक प्रशिक्षण के अवसर और निरंतर मूल्यांकन प्रणाली को सराहा।

अध्यापकों की राय में दो वर्षीय पाठ्यक्रम से उन्हें छात्रों को बेहतर ढंग से प्रशिक्षित करने का पर्याप्त समय मिलता है। पाठ्यक्रम में शामिल स्कूल अनुभव कार्यक्रम को उन्होंने अत्यंत उपयोगी बताया। हालांकि कुछ अध्यापकों ने पाठ्यक्रम की व्यापकता और मूल्यांकन प्रणाली में सुधार की आवश्यकता बताई।

परिणाम	संख्या	प्रतिशत
अत्यधिक रुचि	174	72.5%
मध्यम रुचि	48	20.0%
कम रुचि	18	7.5%
कुल	240	100%

तालिका 2: अध्यापकों की रुचि का वितरण

4.2 प्रशिक्षु छात्रों की रुचि

प्रशिक्षु छात्रों के संदर्भ में, अध्ययन से पता चला कि कुल 68.3% छात्र दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम से संतुष्ट हैं। विभिन्न परिणामों के अनुसार छात्रों की रुचि का वितरण निम्नलिखित है:

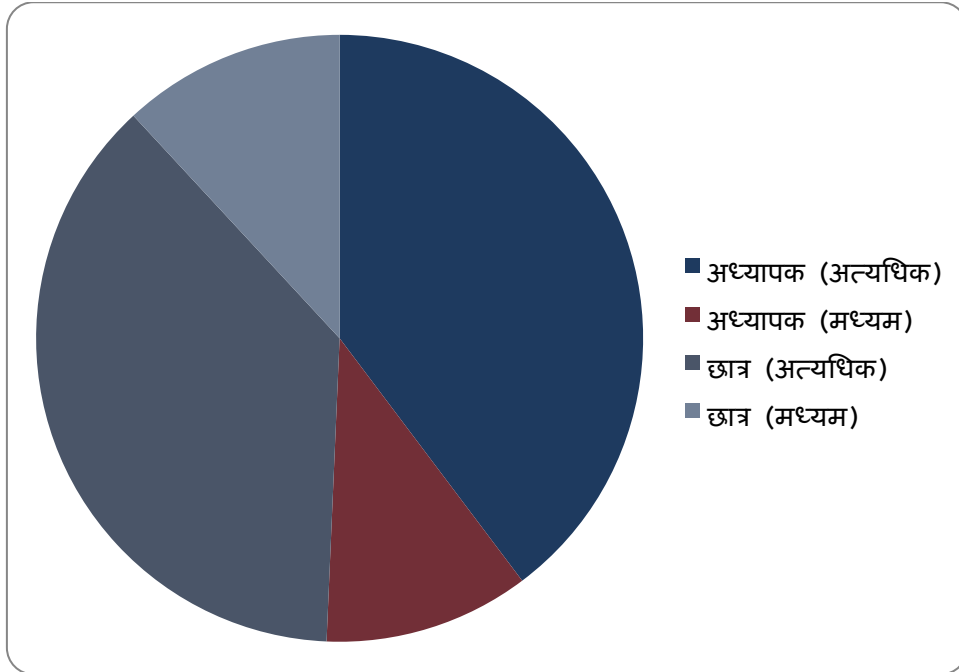
छात्रों की रुचि के विश्लेषण से पता चला कि पुरुष और महिला छात्रों के बीच रुचि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। शहरी क्षेत्र के छात्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों ने पाठ्यक्रम के प्रति अधिक रुचि दिखाई। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र शिक्षक बनने के अवसर को अधिक महत्व देते हैं।

छात्रों ने विशेष रूप से पाठ्यक्रम में शामिल व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सराहना की। माइक्रो टीचिंग, स्कूल अनुभव कार्यक्रम और कार्यशालाओं को उन्होंने अत्यंत उपयोगी बताया। हालांकि छात्रों ने पाठ्यक्रम की व्यापकता और अध्ययन सामग्री की उपलब्धता में सुधार की मांग की।

परिणाम	संख्या	प्रतिशत
अत्यधिक रुचि	205	68.3%
मध्यम रुचि	65	21.7%
कम रुचि	30	10.0%
कुल	300	100%

तालिका 3: प्रशिक्षु छात्रों की रुचि का वितरण

अध्यापकों और छात्रों की रुचि का तुलनात्मक प्रदर्शन निम्नलिखित चित्र में दिखाया गया है:



चित्र 1: अध्यापक एवं छात्र रुचि का तुलनात्मक प्रदर्शन

5. चर्चा

अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि अध्यापक की तुलना में प्रशिक्षु छात्रों से अधिक रुचि दिखाई देती है। इसका कारण यह है कि अध्यापक इस पाठ्यक्रम को व्यावसायिक दृष्टिकोण से देखते हैं और उन्हें लगता है कि इससे उनकी शिक्षा कौशल में वृद्धि होगी। अध्यापकों को लगता है कि दो वर्षीय पाठ्यक्रम से उन्हें अधिक समय मिलता है छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए।

छात्रों की रुचि के संदर्भ में, विशेष रूप से पाठ्यक्रम की व्यापक तालिका, स्कूल आधारित संयोजन की कमी एवं अध्ययन व्यवस्था के कारण छात्रों की रुचि में कमी आई है। यह निष्कर्ष नायक और डैश (2021) के अध्ययन के परिणामों से मेल खाता है, जिन्होंने भी पाठ्यक्रम की व्यापकता को एक मुख्य समस्या के रूप में देखा है। साइंटिफिक सामाजिक संशोधन (2025) के अनुसार, अध्यापक विकास के लिए निरंतर शिक्षा और तकनीकी का प्रभावी एकीकरण दोनों को प्रोत्साहन करता है। इसलिए, पाठ्यक्रम को और अधिक प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है।

अध्ययन के परिणामों से यह भी पता चलता है कि अध्यापकों और छात्रों दोनों ही पाठ्यक्रम की अवधि को उचित मानते हैं। दो वर्ष का समय शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए पर्याप्त माना गया। हालांकि पाठ्यक्रम की संरचना और सामग्री में सुधार की आवश्यकता दोनों वर्गों ने व्यक्त की।

अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों के साथ तुलना करने पर पाया गया कि भारत में दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की स्थिति अन्य देशों के समान है। ज्यादातर देशों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि दो से चार वर्ष के बीच है। अन्य देशों में भी पाठ्यक्रम की व्यापकता और व्यावहारिक प्रशिक्षण की कमी को एक समस्या के रूप में देखा गया है।

चर्चा के दौरान यह बात भी सामने आई कि अध्यापकों और छात्रों के बीच संवाद की कमी भी रुचि में अंतर का एक कारण हो सकता है। अध्यापक छात्रों की अपेक्षाओं और चिंताओं को पूरी तरह समझ नहीं पाते जिससे पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से संचालित करने में कठिनाइयां आती हैं। इसलिए अध्यापकों और छात्रों के बीच नियमित संवाद की आवश्यकता है।

6. निष्कर्ष

इस अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकले हैं:

- अध्यापकों की दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति रुचि अधिक है (72.5%)
- प्रशिक्षु छात्रों की रुचि में अध्ययन के तुलनात्मक रूप से कमी आई (68.3%)
- पाठ्यक्रम की व्यापक तालिका और स्कूल आधारित संयोजन की कमी रुचि के प्रमुख कारक हैं
- अध्यापकों और छात्रों की रुचि के बीच काफी अंतर नहीं है

इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

पाठ्यक्रम की व्यापक तालिका को संतुलित किया जाए ताकि छात्र अधिक रुचि दिखा सकें, स्कूल आधारित संयोजन को प्रासंगिक बनाया जाए, अध्यापकों के लिए निरंतर शिक्षा का प्रबंध किया जाए, आईसीटी सुविधाओं को बढ़ाया जाए, और पाठ्यक्रम को वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल अध्ययन किया जाए।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम को अध्यापकों और छात्रों द्वारा कुल मिलाकर सकारात्मक रूप से देखा गया है। हालांकि पाठ्यक्रम में कुछ सुधारों की आवश्यकता है जिससे इसकी प्रभावशीलता और बढ़ सके। भविष्य के अध्ययनों में पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं का गहन विश्लेषण करने की आवश्यकता है। निरंतर मूल्यांकन और सुधार से पाठ्यक्रम को और प्रभावी बनाया जा सकता है।

इस अध्ययन की सीमाओं में यह शामिल है कि यह केवल एक प्रदेश तक सीमित था और सुविधाजनक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया। भविष्य के अध्ययनों में बड़े भौगोलिक क्षेत्र को कवर करना और यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग करना चाहिए। इसके अलावा पाठ्यक्रम के विभिन्न घटकों के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए अधिक विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। अंत में यह कहा जा सकता है कि दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण कदम है शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधार की दिशा में।

7. सुझाव

अध्ययन के परिणामों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं जिनसे दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार हो सकेगा:

- पाठ्यक्रम की व्यापक तालिका को संतुलित किया जाए ताकि छात्र अधिक रुचि दिखा सकें।
- स्कूल आधारित संयोजन को प्रासंगिक बनाया जाए।
- अध्यापकों के लिए निरंतर शिक्षा का प्रबंध किया जाए।
- आईसीटी सुविधाओं को बढ़ाया जाए।
- पाठ्यक्रम को वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल अध्ययन किया जाए।
- व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और प्रभावी बनाया जाए।
- अध्ययन सामग्री की गुणवत्ता में सुधार किया जाए।
- मूल्यांकन प्रणाली को अधिक न्यायसंगत बनाया जाए।
- छात्रों के लिए करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।
- शिक्षण संस्थानों में आधुनिक तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

इन सुझावों को लागू करने से दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार होगा और अध्यापकों एवं छात्रों की रुचि में वृद्धि होगी। शिक्षा प्रशासन को इन सुझावों पर विचार करने की आवश्यकता है। नियमित समीक्षा और मूल्यांकन से पाठ्यक्रम को समयानुकूल बनाए रखा जा सकता है।

संदर्भ

1. Andrade, H. L. (2019). A critical review of research on student self-assessment. *Frontiers in Education*, 4, 87. <https://doi.org/10.3389/educ.2019.00087>
2. Ansley, B. M., Houchins, D., & Varjas, K. (2021). Cultivating positive teacher-student relationships in middle schools. *Middle School Journal*, 52(3), 22-31.
3. Arora, R. (2021). Teacher education imperatives for ensuring quality. Ministry of Education, Government of India.
4. Bajaj, R., & Sangha, M. K. (2019). Challenges in implementation of new curriculum. *Amity International Journal of Teacher Education*, 4(1), 45-52.
5. DePiper, J. N., Nikula, J., & O'Connor, C. (2021). Professional development for teaching mathematics to English learners. *Journal of Teacher Education*, 72(3), 324-339.
6. Giovazolias, T., Syngelaki, E. M., & Papastylianou, A. (2020). Effectiveness of a teachers' training program on their core self-evaluations. *International Journal of Educational Psychology*, 9(2), 123-145.
7. Heppt, B., Haag, N., Bohme, K., & Stanat, P. (2022). The role of language skills in reading comprehension. *Contemporary Educational Psychology*, 68, 101985.
8. Izquierdo, A., Pozo-Rico, T., Perez-Rico, C., Fernandez-Garcia, C., Castejon, J. L., & Gilar-Corbi, R. (2025). Effectiveness of a training program on the psychological well-being and self-efficacy of active teachers. *Education Sciences*, 15(3), 382.
9. Kelley, T. R., Knowles, J. G., Holland, J. D., & Han, J. (2020). Increasing high school teachers self-efficacy in integrated STEM instruction. *Journal of Technology Education*, 32(1), 85-106.
10. Loyalka, P., Popova, A., Li, G., & Shi, Z. (2019). Does teacher training actually work? Evidence from a large-scale randomized evaluation. REAP Working Paper, 330.
11. Martinez-Saura, J. G., Garcia-Garcia, J., & Lleo, A. (2024). Teacher well-being and emotional intelligence. *Revista de Educacion a Distancia*, 24(73), 1-18.
12. Mukherjee, P. (2024). A study on the perception of B.Ed. students towards peace education. *International Journal of Multidisciplinary Research*, 25(1), 28-38.
13. Nayak, R. K., & Dash, S. (2021). Problems in the implementation of two-year Bachelor of Education course in Odisha. *Journal of Educational Research*, 8(4), 112-125.
14. NCTE. (2021). National Curriculum Framework for Teacher Education (NCFTE). National Council for Teacher Education, New Delhi.
15. Ramani, P. (2023). Perceptions of B.Ed students on the course of 'Understanding the Disciplines and Academic Subjects'. *Asian Journal of Advanced Research and Reports*, 17(4), 45-56.
16. Taschner, R., Backman, M., & Gidlund, U. (2024). Teacher self-efficacy and professional development. *Teaching and Teacher Education*, 138, 104456.
17. Times Now. (2026, March 24). Education Ministry says no plan to restore 1-year B.Ed programme. Times Now News.
18. Wang, Y., & Liu, J. (2025). The effectiveness of professional development in the self-efficacy of in-service teachers in STEM education: A meta-analysis. *Behavioral Sciences*, 15(10), 1364.
19. Zhang, L., & Chen, X. (2025). A systematic review on the impact of teacher professional development on digital instructional integration. *Frontiers in Education*, 10, 1541031